वीभत्स रस

घृणित वस्तुओं को देखकर या सुनकर उत्पन्न होने वाली घृणा/ग्लानि वीभत्स रस की पुष्टि करती है।

स्थायी भाव– जुगुप्सा।

Ex. रिपु आंतन की कुंडली, कर जोगिनी चबात।
पीबहि में पागी अली, जुबति जलेबी खात।

उदाहरण— सिर पर बैठो काग, आँखि दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार, अतिहि आनँद उर धारत॥
गिद्ध जाँघ कह खोदि-खोदि के मांस उचारत।
स्वान आँगुरिन काटि-काटि के खान बिचारत॥
बहु चील्ह नोंचि ले जात तुच, मोद मढ्यो सबको हियो।
जनु ब्रह्म-भोज जिजमान कोउ, आज भिखारिन कहुँ दियो॥

स्पष्टीकरण—यह श्मशान का दृश्य है। पशु-पक्षियों की क्रीड़ाओं को देखकर चाण्डाल-सेवारत राजा हरिश्चन्द्र के मन में जो 'घृणा' पैदा हो रही है, वही स्थायी भाव है। 'शवों की हड्डी, त्वचा आदि' आलम्बन विभाव हैं। 'कौओं का आँख निकालना, सियार का जीभ को खींचना, गिद्ध का जाँघ खोद-खोदकर मांस नोचना तथा कुत्तों का उँगलियों को काटना' उद्दीपन है। 'राजा हरिश्चन्द्र द्वारा इनका वर्णन' अनुभाव है। 'मोह, स्मृति आदि' संचारी भाव हैं. इस प्रकार यहाँ बीभत्स रस की निष्पत्ति हुई है।

'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा
बरषइ कबहुं उपल बहु छाडा'

आँखे निकाल उड़ जाते, क्षण भर उड़ कर आ जाते

शव जीभ खींचकर कौवे, चुभला-चभला कर खाते

भोजन में श्वान लगे मुरदे थे भू पर लेटे

खा माँस चाट लेते थे, चटनी सैम बहते बहते बेटे

लाथिन सों लोहू के प्रवाह चले जहां तहां, मानहुँ गरिन गेरु झरना झरत हैं।

सोनित सरित घोर, कुंजर करारे भारे, कूल ते समूल बाजि-बिटप परत है॥

सुभट सरीर नीर बारी भारी भारी तहां, सूरनि उछाह, कूर कादर डरत हैं।

फेकरि फेकरि फेरु-फारि फारि पेट खात, काक कंक-बालक कोलाहल करत हैं॥

ओझरी की झोरी काँधे, आसवि की सेल्ही वांधे, सूँड़ के कमंडलु, खपर किये कोरि कै।

जोगिनी झुटुंग झुंड-झुंड बनी तापसी सी तीर-तीर बैठीं सो समर सरि खोरि कै॥

सोनित सो सानि सानि गूदा खात सतुआ से, प्रेत एक पियत बहारि घोरि घोरि कै।

तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ हेरि हेरि हँसत हैं हाथ जोरि जोरि कै॥

कोउ अँतड़िनि की पहिरि माल इतरात दिखावत।
कोउ चरबी लै चोप सहित निज अंगनि लावत॥
कोउ मुंडनि लै मानि मोद कंदुक लौं डारत।
कोउ रुंडनि पै बैठि करेजौ फारि निकारत॥

रौद्र रस

परिभाषा :—

जब क्रोध नामक स्थायी भाव, विभाव अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब रौद्र रस की निष्पत्ति होती है।

Ex.

ज्वलल्ललाट पर अदम्य, तेज वर्तमान था
प्रचण्ड मान भंग जन्य, क्रोध वर्तमान था
ज्वलन्त पुच्छ-बाहु व्योम में उछालते हुए
अराति पर असह्य अग्नि-दृष्टि डालते हुए
उठे कि दिग-दिगन्त में अवर्ण्य ज्योति छा गई।
कपीश के शरीर में प्रभा स्वयं समा गई।

"माखे लखन कुटिल भयीं भौंहें।
रद-पट फरकत नयन रिसौहैं।।
कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनु बान।
नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रमान।।"

‘बोरौ सवै रघुवंश कुठार की धार में बारन बाजि सरत्थहि।
बान की वायु उड़ाइ कै लच्छन लक्ष्य करौ अरिहा समरत्थहिं।
रामहिं बाम समेत पठै बन कोप के भार में भूजौ भरत्थहिं।
जो धनु हाथ धरै रघुनाथ तो आजु अनाथ करौ दसरत्थहि’।

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सांभर।

धनुहि सम त्रिपुरारि द्युत बिदित सकल संसारा।

Gyansindhu Coaching Classes

उदाहरण " उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।"

स्थायी भाव	क्रोध
आश्रय	अर्जुन
विषय	अभिमन्यु को मारने वाला जयद्रथ
उद्दीपन	अकेले बालक अभिमन्यु को चक्रव्यूह में फँसाना तथा सात महारथियों द्वारा उस पर आक्रमण करना
अनुभाव	शरीर काँपना, क्रोध करना, मुख लाल होना
संचारी भाव	उग्रता, चपलता आदि।

भयानक रस

परिभाषा :—

जब भय नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब भयानक रस की निष्पत्ति होती है।

Ex —

Gyansindhu Coaching Classes
Hindi by: Arunesh SIR

उदाहरण "एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही पर्‌यो मूरछा खाय।।"

स्थायी भाव	भय
आश्रय	राहगीर
विषय	अजगर, मृगराज (सिंह) का राहगीर की ओर बढ़ना
उद्‌दीपन	भयानक जंगल
अनुभाव	डरना, मूर्च्छित होना
संचारी भाव	मरण, बेहोश होना आदि।

उधर गरजती सिंधु लहरियाँ
कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रहीं फेन उगलती
फन फैलाये व्यालों सी।

लंका की सेना तो कपि के गर्जन रव से काँप गई।
हनूमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भाँप गई।
उस कंपित शंकित सेना पर कपि नाहर की मार पड़ी।
त्राहि-त्राहि शिव त्राहि-त्राहि शिव की सब ओर पुकार पड़ी॥

एक बार अपने सभी
दोस्तों में शेयर कीजिएगा

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज

अनुशासनेन विद्या

अभ्यासेन विद्या

ज्ञानात् मुक्तिः

★ ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||★

SUBSCRIBE